International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 12, Issue 4, July - August 2025

Impact Factor: 8.152

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204091

'एक स्विच था भोपाल में': आपदा, साहित्य और सामाजिक यथार्थ

Dr. Supriya P[1], Vishnu Suresh[2]

Assistant Professor, Department of Hindi, Central University of Kerala, Kasaragod, Kerala, India[1]

Former PG Student, Department of Hindi, Central University of Kerala, Kasaragod, Kerala, India[2]

आज वे कीटनाशक के नाम पर/आदमखोर गैस बना रहे हैं
और हम इसमें भी मुनाफा कमा रहे हैं।
हाय री, मुनाफे की हवस!
काले पैसे का कफस!/ जहर के सौदागर
और आठ लाख आबादी का एक शहर..."।[1]

राजेन्द्र अनुरागी अपनी कविता 'भोपाल गैस-त्रासदी' में मुनाफे के लालच से उपजी भोपाल गैस त्रासदी की और इशारा करते है। हमने दुनिया में कई त्रासदियाँ देखी हैं। 'भोपाल गैस त्रासदी' भारत में हुई सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना थी। "सन् 1984 दिसंबर 2 की रात में यूनियन कार्बाइड में ज़हरीली गैस का रिसाव हुआ और 15000 से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई। यह एक भयावह रात थी, जिसे भोपाल कभी नहीं भूलेगा। प्रभाव की दृष्टि से भोपाल गैस त्रासदी को भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदा के रूप में जाना जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनी यूनियन कार्बाइड कोरपरेशन की अंतहीन मुनाफाखोरी के कारण उस रात भोपाल शहर में हज़ारों लोगों की जान चली गई।"[2] इस आपदा ने पर्यावरण सुरक्षा, इसी तरह की दुर्घटनाओं से बचने के लिए निवारक रणनीतियों और औद्योगिक आपदा तैयारियों के लिए लागू करने योग्य अंतर्राष्ट्रीय मानकों की आवश्यकता को इंगित किया।

साहित्य के साथ-साथ मीडिया भी इस प्रकार की त्रासदियों और उनसे जुड़ी बातों को लोगों तक पहुँचाने में सक्षम है। कुछ लेखकों और मीडिया ने भोपाल गैस रिसाव के कारण हुई आपदा और उसकी भयावहता को बताने की कोशिश की है। हिंदी साहित्य में काव्य, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि साहित्यिक विधाओं में भोपाल गैस त्रासदी के संबंधित कुछ रचनाएँ देखने को मिलती है। प्रभात त्रिपाठी द्वारा लिखित 'भोपाल' कविता और राजेंद्र अनुरागी द्वारा लिखित 'भोपाल गैस त्रासदी' कविता में भोपाल गैस त्रासदी के मार्मिक चित्रण देखने को मिलते हैं। व्यवस्था की मार से घायल भोपाल त्रासदी के पीड़ितों को राहत पहुँचाने की विनती करते हुए उदय प्रकाश कहते हैं- "उस अमर नींद के काले माथे पर रखो। बहुत संभलकर अपने संगीत के मुलायम उजले पंख।"[3] यदि यह औद्योगिक दुर्घटना नहीं घटती तो उनकी साँसें सुंदर संगीत का आलापन बन सकती थीं, पर आज उन बीमारों की स्थिति ऐसी हो गई है कि वे जीवन के रंगों से एकदम कट गए है। सन् 2012 में लिखा गया नरेंद्र नागदेव का उपन्यास 'एक स्विच था भोपाल में' और अंजलि देशपांडे का उपन्यास 'महाभियोग' (2016) का केंद्रीय विषय भोपाल गैस आपदा है। मृदुला गर्ग की कहानी 'विनाशदूत' और नासिरा शर्मा द्वारा लिखित 'इब्ने मरियम' में भोपाल गैस आपदा का मार्मिक चित्रण देखा जा सकता है। निबंध साहित्य में भी भोपाल गैस त्रासदी के बारे में रचनाएँ मिलती हैं। मृदुला गर्ग द्वारा रचित 'कालीदास का विद्रोही मेघ' नामक निबंध में भोपाल गैस त्रासदी पर लेखिका प्रकाश डालती है।

उपन्यास 'एक स्विच था भोपाल में' भोपाल गैस त्रासदी की पृष्ठभूमि में रचा गया एक अत्यंत मार्मिक और यथार्थवादी कथा-वृत्त है। कहानी का केंद्र उन साधारण लोगों का जीवन है, जिनकी नियति 2–3 दिसम्बर 1984 की रात एक ही पल में बदल गई। कथा की शुरुआत भोपाल के एक सामान्य, शांत और साधारण-सी दिखने वाली बस्ती से होती है। यहाँ मजदूर, छोटे कर्मचारी, महिलाएँ, बच्चे और बुजुर्ग अपना रोज़मर्रा का जीवन जी रहे हैं। यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूरों के बीच सुरक्षा-व्यवस्थाओं को लेकर चिंताएँ तो हैं, पर रोज़गार की मजबूरी उन्हें चुप रहने पर विवश करती है। लेखक ने इन पात्रों के माध्यम से उस सामाजिक-आर्थिक ढाँचे को दिखाया है जिसमें गरीब वर्ग की आवाज़ अक्सर अनसुनी रह जाती है।

कहानी धीरे–धीरे उस त्रासदी की ओर बढ़ती है जिसकी आहट पात्रों को तो नहीं, पर पाठक को स्पष्ट रूप से महसूस होती है। फैक्ट्री में मशीनों की जर्जर होती स्थिति, प्रबंधन की उदासीनता और मजदूरों की लगातार की गई शिकायतों की अनदेखी- ये सभी घटक आसन्न आपदा का संकेत देते हैं। "वेस्ट वर्जीनिया में स्टेनलेस स्टील के सुरक्षित कंटेनरों में सिर्फ आधा टन मिथाइल आयसो साइनेट स्टोर की जाती है, जबकि भोपाल में विशाल टैंक नंबर 610 बनाकर उसमें 60 टन से भी अधिक भर दी जाती है। "मरना हो

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 4, July - August 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1204091

तो मरें वे और उनके आसपास की बस्ती वाले!"[4] इस प्रकार लेखक यह स्पष्ट करता है कि फैक्ट्री अधिकारियों के लाभ के लिए लोगों की सुरक्षा पर विचार किए बिना काम हो रहा था। फिर आती है वह भयावह रात जब मेथिल आइसोसाइनेट (MIC) का रिसाव शुरू होता है। उपन्यास में इस दृश्य का चित्रण अत्यंत सजीव है - हवा में तीखी गंध, अचानक फैला धुंधलापन, भागते हुए लोग, खाँसी, जलन और आंखों में जलते अंगारे जैसी पीड़ा, अस्पतालों की भीड़ और डॉक्टरों की असमर्थता, प्रशासन का भ्रम और भय। इन विवरणों के माध्यम से लेखक पाठक को सीधे त्रासदी के केंद्र में ले जाता है।

इस उपन्यास में लेखक दिखाता है कि जब बड़ी आपदा से पहले फैक्ट्री में एक छोटे से रिसाव में 25 लोग घायल हो गए थे, तब भी अधिकारियों ने उस एक घटना को गंभीरता से नहीं लिया। उपन्यास के इस दृश्य में यह व्यक्त होता है - "यह सूचना देते हुए भी फ्रेड एक मूंगफली के सख्त छिलके को उंगलियों से दबाकर तोड़ने की असफल कोशिश कर रहा था। तब विलियम व्हाइट ही उसके पास आकर सलाह देने लगा कि उसे दांतों से तोड़ना ही ठीक रहेगा। बाहर घायल लोगों को एंबुलेंस में डाला जा रहा था।"[5] कथा में कई प्रमुख पात्र अपने-अपने तरीके से गैस के प्रकोप का सामना करते हैं। कोई अपने बच्चों को बचाने की कोशिश करता है, कोई बुजुर्गों को सहारा देता है, कोई सड़क पर ही दम तोड़ देता है। इन व्यक्तिगत कथाओं के जरिए सामूहिक त्रासदी का रूप और भी गहरा हो उठता है।

त्रासदी के बाद उपन्यास उन दीर्घकालिक समस्याओं पर रोशनी डालता है जो आज भी भोपाल के लोगों का पीछा करती हैं - साँस और आँखों के रोग, शारीरिक अपंगता, विषाक्त जल, नवजात शिशुओं में जन्म-दोष, आर्थिक स्थिति का और खराब हो जाना, न्याय की लड़ाई का अंतहीन संघर्ष। लेखक यह भी दिखाता है कि किस तरह पीड़ितों की पीड़ा को राजनीतिक व प्रशासनिक उदासीनता और कॉर्पोरेट शक्तियों के गठजोड़ ने और गहरा कर दिया। उपन्यास का समापन त्रासदी के बाद बचे हुए लोगों की टूटन, संघर्ष और हिम्मत पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दिखाता है कि गैस ने केवल लोगों को नहीं मारा- उसने उनके सपने, रिश्ते, आशाएँ और भविष्य भी छीन लिया। फिर भी जीवन अपनी गति से आगे बढ़ता है, और यही मानवता का सबसे सशक्त पक्ष है।

उपन्यास 'एक स्विच था भोपाल में' भोपाल गैस त्रासदी पर आधारित उन विरले हिन्दी कृतियों में से है, जो इतिहास, राजनीति और मानवीय पीड़ा - तीनों को एक साथ साहित्यिक रूप में समेटने का प्रयास करती हैं। यह कृति न केवल 2–3 दिसम्बर 1984 की भयावह रात का चित्रण करती है, बल्कि उस रात के पीछे छिपे कॉर्पोरेट लालच, सरकारी उदासीनता और गरीब मजदूरों के जीवन–यथार्थ को भी उजागर करती है। उपन्यास का शीर्षक "एक स्विच था..." प्रतीकात्मक रूप से इस सत्य की ओर संकेत करता है कि पूरी त्रासदी कुछ क्षणों, कुछ निर्णयों और कुछ लोगों की लापरवाही से घटित हुई- जैसे किसी ने अनजाने या जानबूझकर एक स्विच ऑन किया और पूरा शहर मौत की गिरफ्त में चला गया। यह 'स्विच' सिर्फ मशीन का नहीं, बल्कि सत्ता, व्यवस्था और नैतिकता का भी रूपक है। 'एक स्विच' यहाँ मात्र मशीनरी का नहीं, बल्कि कॉर्पोरेट लालच और शक्ति का प्रतीक है। इस स्विच ने एक पूरे शहर की जिंदगी बदल दी। समग्रतः, 'एक स्विच था भोपाल में' सिर्फ एक त्रासदी पर आधारित उपन्यास नहीं, बल्कि भारतीय समाज के लिए एक दर्पण है- जो यह दिखाता है कि विकास के वादों, औद्योगिक प्रगति और कॉर्पोरेट नीतियों के पीछे छिपे जोखिमों को समझे बिना सामाजिक न्याय संभव नहीं। यह उपन्यास उन लाखों मौन पीड़ितों की स्मृति को संरक्षित करता है और साहित्य के माध्यम से उनके अनुभवों को अमर कर देता है।

भोपाल गैस त्रासदी केवल एक औद्योगिक दुर्घटना भर नहीं थी, बल्कि यह आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था, तकनीकी विकास की अंधी दौड़ और सरकार-कॉर्पोरेट गठजोड़ की सीमा-रेखाओं को उजागर करने वाली एक ऐतिहासिक घटना बन गई। यह त्रासदी इस बात का प्रमाण है कि जब लाभ को मानव जीवन से ऊपर रखा जाता है, तो परिणाम केवल भौतिक विनाश नहीं होता, बल्कि संपूर्ण सामाजिक संरचना में स्थायी दरारें पड़ जाती हैं। त्रासदी के बाद हुए मुकदमे, मुआवज़े की मांग, वैश्विक स्तर पर यूनियन कार्बाइड की जवाबदेही और प्रशासन की पूछताछ - इन सबने एक व्यापक राजनीतिक विमर्श को जन्म दिया। परंतु दुख की बात यह है कि न्याय का यह संघर्ष आज भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। पीड़ितों को मिले मुआवज़े को अपर्याप्त माना गया, और स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर पड़े दीर्घकालिक प्रभावों का सही आकलन भी कई दशकों बाद तक नहीं हो पाया।

साहित्य और मीडिया दोनों के लिए यह आपदा एक महत्त्वपूर्ण विषय हो सकती थी, परंतु विडंबना यह है कि इस पर उतना रचनात्मक, आलोचनात्मक या सांस्कृतिक लेखन सामने नहीं आया, जितना कि इसके ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए अपेक्षित था। हिंदी साहित्य में कुछ संवेदनशील लेखकों ने अवश्य इस त्रासदी के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को अभिव्यक्त किया, परंतु मुख्यधारा साहित्य में इसकी व्यापक उपस्थिति अब भी नहीं मिलती। इसके विपरीत पश्चिमी मीडिया और विदेशी लेखन में इस दुर्घटना को एक वैश्विक कॉर्पोरेट अपराध के रूप में अक्सर चर्चा मिलती है। हिंदी क्षेत्र में यह स्थिति इस बात की ओर संकेत करती है कि हमारे साहित्यिक परिदृश्य में पर्यावरणीय न्याय, औद्योगिक जोखिम और कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के मुद्दों पर विमर्श अभी भी सीमित है।

यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि भोपाल गैस त्रासदी ने 'पर्यावरण साहित्य' या 'इको-क्रिटिसिज़्म' की अवधारणा को हिंदी साहित्य में एक नया आयाम दिया। इस घटना के बाद पर्यावरणीय संरक्षण, औद्योगिक नैतिकता और मानवीय अस्तित्व के सवालों ने साहित्य को अधिक राजनीतिक और अधिक सामाजिक बनाया। कई युवा लेखकों ने इस त्रासदी को अपनी रचनाओं के माध्यम से स्मृति में जीवित रखा, जिससे यह केवल ऐतिहासिक अध्याय नहीं, बल्कि एक सतत सामाजिक चेतना का हिस्सा बन सकी। मीडिया अध्ययन के दृष्टिकोण से देखा जाए तो त्रासदी के तुरंत बाद टीवी और अखबारों ने इस आपदा के भयावह स्वरूप को लोगों तक पहुँचाया, परंतु समय गुजरने के साथ यह विषय स्क्रीन और कागज़ से धीरे-धीरे गायब होता गया। कुछ डॉक्यूमेंट्री और समाचार-श्रृंखलाओं को छोड़ दें, तो जनमाध्यमों में इस घटना पर गहराई से चर्चा बहुत कम होती है। जबकि त्रासदी के प्रभाव आज भी भोपाल की हवा, पानी, मिट्टी और हजारों बीमार शरीरों में जीवित हैं।

इस संदर्भ में साहित्य की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। साहित्य उन अनुभवों को आवाज़ देता है जिन्हें मीडिया के फ़्लैश और राजनीति के मंच भुला देते हैं। "एक स्विच था भोपाल में" जैसे उपन्यासों में आम नागरिक के जीवन में झांकने वाला जो यथार्थ और पीड़ा प्रस्तुत की गई है, वह केवल इतिहास नहीं, बल्कि चेतावनी भी है। ऐसी रचनाएँ यह भी समझाती हैं कि त्रासदी केवल एक क्षणिक घटना नहीं, बल्कि दीर्घकालिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों की श्रृंखला है, जिसे समझना और याद रखना आवश्यक है। इसलिए, भोपाल गैस त्रासदी पर आधारित साहित्य और मीडिया अध्ययन केवल अतीत की पड़ताल नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की नीतियों, संवेदनाओं और सामाजिक दायित्वों पर भी गंभीर प्रश्न उठाता है।

संदर्भ सूची

1. भोपाल गैस त्रासदी और मीडिया, सत्य सिंह राठौर, पृ.185
2. https://hi.m.wikipidia.org, (भोपाल गैस काण्ड)
3. जन विकल्प, पारिस्थितिक और साहित्य, विकल्प त्रिसूर, पृ. 65
4. एक स्विच था भोपाल में, नरेन्द्र नागदेव, पृ.115
5. वही पृ. 81

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 8.152

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
doi crossref
निस्केयर NISCAIR

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com